

चन्द्र

१२

१० चन्द्र खण्ड विद्वत्

श्रीमद्भगवद्गीता

ARJUNA SAMBACH

3223

१४ श्रीगालम्भयनमः॥ ॥ अथ चन्द्रयागविधिर्लिख्यते ॥ संनिकृष्ट
याविधिर्ध्वजलिख्यते ॥ नित्यकर्मयाय ॥ दिग्वायाया द्वाया
वक्राष्टाचसगखस्त्रिकवायावर्ण ॥ नमोचलुजागयाय ॥ कामा
नी नृद्धलम् ॥ यजमाननृद्धिषक चन्द्रनादि स ग्वनभाह
नी नृद्धस दमनकीकायावस्नानविधि ॥ यूर्लुचंद्रसाक्षी

आय नमः कृष्णायूजाय ॥ पञ्चाङ्गाङ्ग ॥ ॐ नमः
 नाथाहन्विनीः ॥ ॐ नमः ॥ श्रीकृष्णकार्ये नमः ॥ नमो च
 जागलिखन् ॥ दिगधीयाकायाव कोवनासनय ॥ दिव्याङ्ग
 वन स्वस्तिक शाय ॥ स्वस्तिक सन ॥ लयननकायायाव ॥
 सिन्धुलनशाय ॥ चिद्विद्याय सिन्धु न ॥ पनवासन शाय



नवन स्वटकोल जवरववचुमदलअप्रशाय ॥ स्वस्तिक स
 काभाजमय ॥ जायूजावलियाग १ ॐ पूयाट २ नवलियू
 २ ॥ लखराय चन सिन्धु जजमका खान ॥ सूर्यार्घ्य ॥ गूत्र
 नमस्काय ॥ आसलू कूलच ॥ स्ववायनम्याय रुद्र ॥ लूकू
 लच ॥ स्ववायकनिष्ठकायनमः ॥ ॐ ह्यादिषदं गन ॥

कच वक्र शृंगान्यास ॥ ऊलपाद नृद्यपाग्रयूजा रूगशुद्धि
॥ आत्मपूजा ॥ संवरुनित्रावाहन ॥ गिदव ॥ आसन ॥ ह्रूंग
लयनयनमः ॥ ह्रूंगचूषानमः ॥ ह्रूंग्राधवग कथनमः
॥ ह्रूंग्रननासनायनमः ॥ ह्रूंकंदासनायनमः ॥ ह्रूंग्रा
चासनायनमः ॥ ह्रूंग्रासनायनमः ॥ ह्रूंकंसासनाय

नमः ॥ ह्रूंकल्लिकासनायनमः ॥ ह्रूंग्रासनायनमः ॥ ह्रूंग्रा
कूलच ॥ ह्रूंग्राचायनासनायनमः ॥ ह्रूंकूलच ॥ ह्रूंग्रा
अनमः ॥ नगाध्यान ॥ शंखमह्यंगचूपास्मा कूलच
॥ ह्रूंग्रासिनं दिरूजास्यामवक्रं गुरुवद्रूपविविध
विनी ॥ सगद्यविमं बोडीपद्ममरु विचिन्मथ ॥ नि

माल्यं सर्वदेवानां च लुनाथनिवेदयन् ॥ प्रियाञ्जलि ॥ नैद्री
 ॐ कूं कूं लूं लूं मूं मूं कूलचलुष्वचरुं च वाययादूकां ॥
 ॐ मूं मूं कूं कूं लूं लूं लचलुष्वचरुं च वाययादूकां ॥ प्रउं ग
 नसं पूष्य ॥ धमन्नुनवलि ॥ लूं चलुष्वच
 यनमः ॥ लूं चलुयनमः ॥ लूं चलुकायालायनमः ॥

लूँचलुनिर्माल्यपत्रिहाचायनमः॥ लूँचकमालायन
 मः॥ लूँमूसलयद्विहाचायनमः॥ लूँकमसाक्षिः॥ लनमः
 ॥ लूँसंहाचरुचवायनमः॥ चवन्नच्छाय॥ अद्यादि॥ मा
 सनक्षय॥ अद्यवाचाहकल्पत्यादि॥ कैलासपी० मध्या
 र्कं काचलानन्दविगुहं। चतुःपी० समायूक्तं, योगिनीसि

द संयुगं ॥ आमं प्रितासिकोली ॥ कोली ॥ सहस्रं ववं ॥ गृहं गुदवद
 वं ॥ गंधपागुदमन्नकं ॥ वगु कक्षुसमायूक ॥ मयक्षुसमन्विनं
 नवधा ॥ गंधपागुदमन्नकं ॥ विद्यापीठिसमस्तं हिनथा ॥ वेखचबी गल
 आमन्त्रिणामया सर्वादिमनादायना गवान् ॥ श्रीकोली ॥ नन्दना
 थ कृत्तिकावापादका ॥ दमननयूक्यामि ॥ मूलमन्त्रनवान्न
 क्वाथश्चमन्त्रनवलि ॥ स्वाकमहावलिनधूनकं ॥ धूप ॥ दीप ॥ जा

प ॥ थ व मूलदव ॥ चूं ॥ स्वाहा स्तोत्र ॥ संवर्ला ॥ चलिमूलिकुनं गुरुं
 चर्मवासनदीपि ॥ कं गं चर्म वंदवं चन्दनाथ ॥ यननम ॥ ४
 गगं धादिनर्यल ॥ पुण्यनायादि ॥ नुकानक ॥ अम्यपूर्व ॥ चन्दजा
 गनं वलि नं विसर्जन ॥ साखिनगुलकं ॥ चलुजागानवलिनी ॥ स्वा
 सधा यकलक्काय ॥ वीवजनपादप्रक्षाल्या ॥ गेगिचलुजाविदि
 समाप्त ॥ संवत् १०२३ ॥ मिगिस ॥ अवलवदि ॥ जोऊ १ ॥ श्रीरुगविनाऊ
 उपाय ॥ गाम्मलिपिनम् ॥ १२ रुम् ॥

आ. १५५५	3223	
ADNA ARCHIVE		

आ. १५५५ ASHA ARCHI, C.	3223	
---------------------------	------	--

8.6
17.2

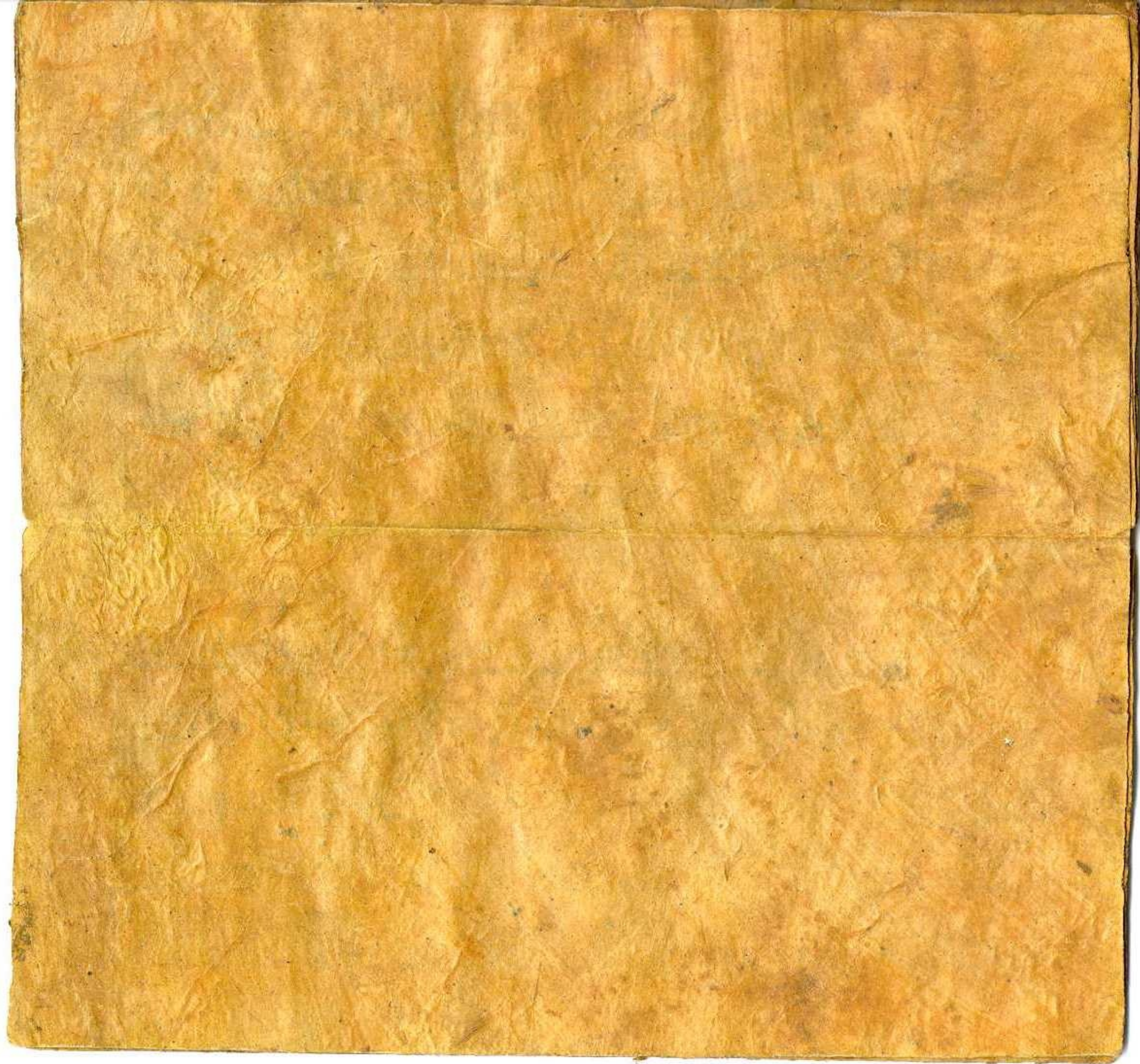
8.6 x 5.02

१ श्रीगणेश

१ श्रीगणेशाय नमः॥ दीक्षुर्जुयाचो निपि सञ्जपादिकर्मया
येमखूमफुधकाञ्चलिसीनचाई नित्यार्चणीजकयाङ्गगतिर्नम
लाक जागादिकर्मणाहर्नतवभाग्यलाई सूर्यपाकसपतिंग
थेक्षारमाल ओथेंतुहेधकाहनीसियेमाललोकी धर्मविना
मदुल्लयागतिर्नमलाक पलोकसंथेनिभलेखनिदुखसुख
मार्ममदुववुमदुदाजुनमखाङ्ग कीर्त्तमदुततामदुकेलेन

मखाङ्ग थर्वमद्भुतिमद्भुजिनजीह्वयाये शान्तलार्तत्त्वनेमद्
नयेनमखान दद्वर्नथथेनिर्वजमर्नजिहात थेंन्मागुकस
जिनजीह्वनेनमन्याङ्ग धुर्गलोकसंजितासुर्नगतिर्नमवील
योगादिभ्यासभतिज्ञाजिनजीमयाङ्ग दीक्षुर्जुयाजिनमस्य
भजपायाजापः जीह्वगुरुजितहातजिनजीमयाङ्ग







चन्द्र

१२